CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीश्रीगौरांगविधुर्जयति

अ-4/9

श्री गीतगोविन्द पद

(ब्रजभाषा में)

प्रकाशक—

कृष्णदास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुस्तक मिलने का पता---

(१) श्रीरामनिवास खेतान की दूकान,

सवामण सालिग्राम मन्दिर के नीचे,

लोई बाजार, वृन्दावन।

(जि० मथुरा)

(२) लाला चेतरामजी, कोसीकलाँ, मथुरा।

(३) बाबा कृष्णदास,

क्या०-बाबा आनन्ददासजी,

कृष्णगंगाआस्थान,

मथुरा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

❀ श्री श्री गौरांगविधुर्जयति ❀

ऊ4/44

श्री गीतगोविन्द पद

3

आम्नाय-ग्रन्थालय
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

श्री श्री जयदेववंशोद्भव
श्री रामरायजी कृत

श्री कृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द
हरेकृष्ण हरेराम राधे गोविन्द
भज—निताई गौर राधेश्याम
जप—हरेकृष्ण हरेराम ।

परम रसिक पूज्य श्री गौरांगदासजी के कृपापात्र कोसी (वरसाना) निवासी लाला चतुर्भुज (हरिसम्बन्धिनाम चैतन्यदास तथा उपनाम चेतरामजी) के संपूर्ण आर्थिक सहाय से प्रकाशित ।

दूसरा भाग
गौरपूर्णिमा
मूल्य ।)
प्रथमावृत्ति १०००

प्रकाशक—
बाबा—कृष्णदास
कुसुमसरोवर
पो० राधाकुण्ड
जिला मथुरा ।

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

विक्रमीय दशवीं शताब्दि में कौशल्यगोत्र पंचप्रवर यजुर्वेद माध्यन्दिनी शाखाध्यायी मोहले सारस्वत द्विजवर एवं खत्रियों के पुरोहित पं० गिरिधारीजी लाहोर में निवास करते थे। उनके मन्दिर में श्रीठाकुर जी की जगह श्रीमद्भागवत की पुस्तक का ही पूजन होता था। उन्हों ने तीनवार भागवत की सप्ताहों का अष्टोत्तर शत पारायण किया। उसी का फल स्वरूप आपके घर में श्रीशुकदेव मुनि ने स्वयं अवतार ग्रहण किया। इनका जन्म लगभग ग्यारहवीं शताब्दी में है। इनको लोग हरदेव भी कहते थे। आपके यथा समय विवाह हुआ। आपसे सं० ११२१ के कार्त्तिक पर शुक्लाष्टमी को श्रीभोजदेव जी प्रघट हुए। आपने बड़े होकर श्रीमाध्वमतावलम्वी श्रीमदाचार्य्य गद्दीस्थ श्रीजयतीर्थजी से वैष्णव दीक्षा प्राप्त की और मुलतान के प्रसिद्ध सारस्वत भूषण पं० वंशीलालजी की पुत्री श्रीराधाजी से विवाह किया इन्हीं श्रीराधादेवी जी से रसिक चूड़ामणि श्रीजयदेव जी का प्रादुर्भाव हुआ था। वैसे तो संसार में श्रीगीतगोविन्द तथा कविनृप श्रीजयदेव जी से सभी परिचित हैं। भक्तमाल में इनके सम्बन्ध में विशेष वर्णन हैं। श्रीरामराय जो लिखते हैं कि—

रसिकवर श्रीजयदेव उदार।
होते जो न मही में तौ को गातौ कुंजविहार।
महारस सागर पूरन चन्द।
कोमल ललित पदावलि विलसित उदयो गीतगोविन्द ॥
कृष्ण निजु कर कमल न पूरयौ।
अपुनो रूप दिखावत कारन जग संशय चूरयौ ॥
जुगल रसकौ यह प्रथम प्रकाश।
जा पाछे सव कोऊ वरन्यौ लै लघु गुरू आभास ॥

इत्यादि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब हम इस गीतगोविन्द पद के रचयिता श्रीरामराय जी के सम्बन्ध में कुछ कहते हैं। श्रीमद्गीतगोविन्द काव्यकर्त्ता सारस्वत द्विज कुलाब्धिकौस्तुभ कविनृपचक्रवर्ति श्रीजयदेव गो० प्रभु से ११ वीं पीढ़ी में एवं कलियुगपावनावतार श्रीमन्नित्यानन्द प्रभु जी के कृपापात्र परमहंसावतंस दार्शनिक सार्वभौम श्रीरामराय गोस्वामी जी वि० सं० १५४० शाके १४०५ वैशाख शुक्ला ११ को प्रघट हुये थे। श्रीनाभा जी ने श्रीभक्तमाल में लिखा है।

विप्र सारस्वत घर जनम श्रीरामराय हरि रतिकरी।
भक्ति ज्ञान वैराग्य योग अन्तर गति पागे।
काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर सब त्यागे।
कथा कीर्तन मगन सदा आनन्द रस झूले।
सन्त निरखि मन मुदित उदित रवि पंकज फूले।
वैर भाव जिन द्रोह किय तासु पगि खिसो भूवि परी।
विप्र सारस्वत घर जन्म श्रीरामराय हरि रतिकरी।

इसी प्रकार अष्टछापन में श्रीनाथजी के अधिकारी श्रीकृष्णदास जी लिखते हैं—

परम रसिक जन मंगल छाये।
पुन्य अपूरव प्रघट भये श्रीरामराय गोस्वामि सिधाये।
महाप्रभु श्रीवल्लभ सुत श्रीविट्ठलजू कौं दै उपदेश सिहाये।
श्री हित हरिवंश हंस संमत अति आचारजजू मित्र मिलाये।
श्रीनित्यानंद महाप्रभु पद रज शिष्य प्रसिद्ध जगत हितु आये।
गोकुल गाम वर्ष द्वै वसि पुनि तीरथ सन्त अनन्त बनाये
भज श्रीकृष्णदास लखि परम हंस गति बहुत समैं वपु दृगन जुड़ाये

(आदिवाणी भूमिका)

श्रीमद्गोस्वामी श्रीप्रियतमलालजी महाराज प्रणीत श्रीरसिकाचार्य चरितावली से श्रीरामरायजी के सम्बन्ध में कुछ पद उद्धृत करते हैं।—यथा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स०—ब्राइस वर्ष रहे घर में निज तात सों कृष्ण कथा रस पीये।
मात-पिता ने विचार कियों अब होय विवाह जेही सुख जीये॥
कान परी जह बात जवे ब्रजजीवन श्रीवन मारग लीये।
कृष्ण वियोग को शोक महा सुख रूप प्रवाह वहे इन हीये॥

दो०—आशुधीर काका मिले हरिद्वार तट गंग।
कर प्रणाम तिनते चले बात कही मन रंग॥

वहाँ से उनको संग में लेकर व्रज में आये तथा व्रज के प्रसिद्ध सिद्ध महात्मा श्री हरदेवजी से मिलकर दीक्षा के लिये प्रार्थना की। किन्तु हरदेवजी ने कहा—तुम जगदीश अंश श्री जयदेव प्रभु के वंश में जन्म लिये हो। तुम्हारे गुरु जगदीश में होंगे। वहाँ से रावल आये और वहाँ श्रीगीतगोविन्द गाते हुए कुछ दिवस विताये। वहाँ श्री प्रिया प्रियतम का साक्षात् दर्शन हुआ। श्रीरामराय मूच्छित हो गये। साथी श्री आशुधीरजी ने विविध चेष्टाओं से चेत कराया। वहाँ से वन समूह भ्रमण करते हुए श्रीगिरिराज तट में पधारे एवं कुछ दिवस वहां निवास कर आशुधीरजी के साथ पुरुषोत्तम पुरी को चल दिये। आपने वहाँ देखा—

धूम मचो हरिकीर्त्तन की जगदीश पुरी में प्रचार छयो है।
श्रीगौरांग महाप्रभु कृष्ण स्वयं भगवत अवतार भयो है॥
आशू कह्यो सुन राम तेरो गुरुदेव तभी उद्धार कह्यो है।
आँखन आज सो देख वही प्रभु तेरी ही ओर निहार रह्यो है॥

क०—अंग अंग कोटिक अनंग की तरंग तहाँ,
रामराय प्रेमासव मूर्छित बनाय कें।
आगे जगदीशजू के कीर्त्तन में रागे भक्त,
तिन ही जगाये हैं प्रसन्न हरि गाय कें॥
गौरकृष्ण आज्ञा पाइ नित्यानंद दीक्षा दई,
उत्सव मनायो श्रीवास के घर आयकें।
देखे प्रेम मूर्त्ति आशुधीर हुँ अधीर भये,
नैन तृप्त होत नहीं रूप रस पायकें॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो०—सरस गोपिका गीत जो लिखित ताड़के पत्र।
निज कर श्री चैतन्य ने दियो गाउ सर्वत्र॥
जाय गोपिका गीत है सोय गीतगोविन्द।
दोनों हो आल्हादमय दोनों परमानन्द॥

स०—गोर प्रहर्षित होय कहे हरिनाम के संग कथा कों प्रचारो।
श्रीजयदेव महाकविराज कृपा तिनकी निज ऊपर धारो॥
सर्व जितेन्द्रिय ऊरधरेता श्रीरामगुसांई तुम्हें निरधारो।
गावहु गोपिकागीत गोविन्द अमन्द जिही उपदेश हमारो॥

आये आज्ञा पायकें श्रीवृन्दावन धाम।
आशुधीर जू के सहित रामराय निष्काम॥

क०—भागवत पत्र ताहि छाती में लगाये रहें,
जहाँ जामें गामें ताहि व्याख्या को बढ़ाय के।
गोपीगीत अद्‌भुत अपूर्व सुनि श्रोता छकें,
आपहु निमग्न होंय सबकों सुनाय के॥
केशीघाट वंशीवट कालिह्नद होत कथा,
तासों ठाम तेहि तेहि कुटिया बनायकें।
राखे सन्त वृन्दावन शोभा है अनोखो लखी,
रामराय जीवन बितायो हरि गायकें॥

दो०—श्रीरावल गोकुल निकट कछुक वर्ष सुख राश।
कथा भागवत की कहत जमुना पुलिन निवास॥

(रसिकाचार्य्यचरितावली।)

आपके कथा कीर्त्तन जगत में प्रसिद्ध होने लगे। आमेर के राजा भगवान्‌दास जी आपके प्रधान शिष्य हुए, उन राजा भगवानदासजी ने गोवर्द्धन में हरिदेवजी का मन्दिर तथा मानसी गंगा का घाट बनवाया था। जिनके पुत्र राजा मानसिंहजी ने अपने गुरु श्री रघुनाथ भट्ट गो० जी के प्रीत्यर्थ श्री रूप गोस्वामीजी द्वारा प्रगटित श्री गोविन्द देव विग्रह के स्थापनार्थ वृन्दावन में लाल पत्थर का वृहत मन्दिर बनवाया था। और भी श्री रामरायजी के एकादश प्रसिद्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिष्य हुए। यथा गरीवदास, बाँकेदास, विष्णुदास, जुगलदास, राधादास, किशोरदास, केशवदास, मनोहरदास, लाखादास, मधुजी, तथा हरिदास हैं। इनके द्वारा रचित गौरविनोदिनी वृत्ति (ब्रह्मसूत्र की चतुः सूत्री पर) अति प्रसिद्ध है। आप संस्कृत के वड़े विद्वान होते हुए भी ब्रजभाषा के वड़े मर्मज्ञ थे। आप के द्वारा रचित श्री आदिवाणी तथा प्रस्तुत गीतगोविन्द देखने से इस बात का पता लगाता है। रामरायजी के पद समूह वल्लभ कुल में नित्य गाया जाता है। पता चला है कि उन के द्वारा रचित ४००० पद हैं। आदिवाणी ब्रजभाषा में वास्तव में सर्व प्रथम है। उस में से वृन्दावन वर्णन का एक पद हम उद्धृत करते हैं यथा—

श्री राधेजू को श्री वृन्दावन वन राजू।
रतन जटित भूमण्डल शोभित कनक वल्लरी साजू॥
अष्ट सिद्धि नव निद्धि वुहारन वीथिन रोपि समाजू।
श्री रामराय प्यारे रखवारी हिय हितु पोखन काजू॥

इनकी अनन्य निष्ठा भी वड़ी श्लाघनीय है। यथा—और कोऊ समझे सो समझो इतनी हमको समझ भलो। ठाकुर नंदकिशोर हमारे ठकुरायणि वृषभानुलली इत्यादि पदों में। प्रस्तुत गीतगोविन्दपद में ग्रन्थकार ने निज संप्रदाय आचार्य्य रसिक मुकुट मणि कविराज श्री जयदेव गोस्वामिजी के द्वारा संस्कृत भाषा में विरचित श्री गीत गोविन्द पदावली का मनोहर विविध छन्दों में मार्मिक प्रदर्शन किया है। आशा है कि पाठक वृन्द मूल पदावली के साथ ब्रज भाषा में उसका रसास्वादन करेंगे। श्री जयदेव वंशोद्भव वृन्दावन निवासी गो० जमुनावल्लभजी द्वारा हस्तलिपि प्राप्त होने पर हम इस ग्रंथ को प्रकाश करने में समर्थ हुए हैं। वरसाना (कोसी) निवासी लाला बनखण्डि के सुपुत्र तथा रसिक प्रवर बाबा गौरांगदासजी के कृपापात्र लाला चतुर्भुजजी (चैतन्यदास हरिसम्बन्धी नाम प्रसिद्धनाम खेतराम) के संपूर्ण आर्थिक सहाय से इस समय यह ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। इति—

विनीत—कृष्णदास, कुसुम सरोवर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री रामराय जी की वंश और गुरुपरम्परा

आमेरके राजा भगवानदासजी के पद में—

जय जय श्री जयदेव ब्रह्ममत (माध्वमत) मण्डना।
सारस्वत द्विज मुकुट भोजकुल चन्द्रमा।
कृत कन्दविल्व उद्यान शोभा सहज सरस सुहावनी।
शुभ माघ सित श्री पंचमी संक्रान्त मकर जु पावनी॥
अनुपम मही मण्डल महोत्सव भाग्य निधि वंगावनी।

आगे परम्परा—

जयदेव सुत श्रीकृष्ण तिन के पुत्र गोविन्द जू भये।
तिन के मुकुन्द अनन्य तिन माधव सुवन प्रद्युम्नये।
तिन बाल मोहनलाल नन्दगोपाल तिन आत्मज लये।
तिन तनुज गुरु गोपाल तिनके रामराय सुचन्द्र ये।
भगवानदास विनीत मंगल गावत करि वन्दना॥
जय जय श्रीजयदेव ब्रह्ममतमण्डना॥

———

श्री राधामाधबो देवस्तच्छिष्योऽथ चतुर्मुखः।
श्री नारदस्ततो व्यासो मध्वाचार्य्यस्ततः पुनः॥
तस्य श्री पद्मनाभस्तच्छिष्योऽक्षोभ्यमुनिस्ततः।
जयतीर्थस्ततो मिश्रभोजदेवः प्रसन्नधीः॥
श्रीभोजदेवारभ्यशिष्यसुतयोरैक्यम्॥

टिपन्याम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीजयतीर्थसे—		श्रीजयतीर्थ—
श्री भोजदेवमिश्र जन्म सं० ११२१		श्रीज्ञानसिन्धु
।		।
,, जयदेवगोस्वामी ,, सं० ११७५		,, दयानिधि
।		।
,, कृष्णदेवगोस्वामी,, सं० १२२०		,, विद्यानिधि
।	मार्गशीर्षपूर्णिमा	।
,, गोविन्दगोस्वामी ,, सं० १२५५		,, राजेन्द्र
।	पौषकृष्णा नवमी	।
,, मुकुन्ददेवगोस्वामी,, सं० १२६१		,, जयधर्म्म
।	कार्त्तिक	,,
,, अनन्यदेबगोस्वामी,, सं० १३२४		,, पुरुषात्तम
।	भाद्रकृष्णाष्टमी	।
,, माधवलालगोस्वामी,, सं० १३६१		,, ब्रह्मण्य
।	वैशाख शुक्ला सप्तमी	।
,, प्रद्युम्नगोस्वामी ,, सं० १३६५		,, व्यासतीर्थ
।	आश्विन शुक्ला दशमी	।
,, हरिमोहनगोस्वामी ,, सं० १४३१		,, लक्ष्मीपति
।	आश्विन पूर्णिमा	।
,, नन्दगोपालगोस्वामी,, सं० १४७०		श्रीनाथजीप्रकटकार्य
।	मार्गशीर्षकृष्णाष्टमी	प्रेमबीज
,, गौरगोपालगोस्वामी,, सं० १५१०		,, माधवेन्द्रपुरी
।	मार्गशीर्ष कृ० पञ्चमी	।

,, नित्यानन्दप्रभु के शिष्य श्रीईश्वरपुरी, श्रीनित्यानन्द, श्रीअद्वैत

। । प्रभु । प्र

,, रामरामगोस्वामीसं०१५४० श्रीमन्महाप्रभु श्रीरामराय

वैशाख शुक्ला द्वादशी ।

,, प्रभुचन्द्रगोपाल सं० १५५२ चैत्र सुदी नवमी राधिकानाथ

,, रामचन्द्रप्रभु

मुद्रक राज नारायन अग्रवाल, मॉडर्न प्रेस नमक की मण्डी, आगरा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ श्रीराधाकुंजविहारिणे नमः ॥

अथ गो० श्रीजयदेव कविराज प्रणीत श्री गीत गोविन्द की श्रीरामराय गोस्वामि कृत

श्रीब्रजभाषा पदावली प्रारभ्यते

प्रथम सर्गः।

दो०—श्री राधामाधव चरन सेवासुख अधिकार।
सहज कृपा जयदेवप्रभु गायो सरस विहार॥ १॥
महा माधुरी तासु जह ललित गीतगोविन्द।
रामराय तिन की दया गावत पद सुख कन्द॥ २॥
बन्दों श्री गुरु गौरपद जग मग जोति अभंग।
मिल अनंगमंजरि सहित एक अंग दो रंग॥

कवित्त—घन घिरि आयो वन सघन तिमिर छायो,
रैनि में डरेंगे देखि लेखि यों दृगन ते।
नन्दिनो कहत वृषभानु नन्दिनी सों नन्द,
नन्दनहि घरे जाहु लेके वेग वन ते।
सखी के वचन पाय प्रेम के रचन भरे,
चले तरु तीर छांह जमुना पुलिन ते।
रामराय मारग रहसि रस केलि भरे,
ऐसे राधा माधो बाधा हरें मेरे मन ते॥ १॥

सवैया—

वानी के चित्र चरित्र सों चित्त निकेतन जासु विचित्र चिन्यो है,
देवी श्री राधिका के पद पंकज दासन में समराज गिन्यो है।
कुंज विहारी के लीला भरे रस सिन्धु सों प्रेम प्रबन्ध जन्यो है,
श्री जयदेव कवीश्वर के महिमामृत "गीत गोविन्द" वन्यो है॥ २॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जो चित चाहत कुंज विहार रसामृत पान महान सुधाहू,
कै कमनीय विशाल कला कवि काव्य जु कान परे जह चाहू।
तो अति सुन्दर सुन्दर श्याम की लीला उमग तरंग प्रवाहू,
श्री जयदेव कवीश्वर की रचना सुन गीत गोविन्द उछाहू ॥ ३ ॥

क०—शब्द आडम्बर में निपुण उमापतिधर,
याकी कविता में अर्थ गौरव न पायो है।
क्लिष्ट काव्य कर्ता श्री शरण गोवर्द्धनजू है,
काव्य में सिंगार रस विरस सुनायो है।
धोई नृप सुनते धारन कर लेत शीघ्र,
भाव आदि तिनको न ठीक दरशायो है।
प्रेम भरी रचना के संग संदर्भ शुद्धि,
रसको स्वरूप जयदेव प्रभु गायो है ॥ ४ ॥

प्रथम प्रबन्ध

अष्टपदी

प्रलय उदधि सों वेद, आपहि हरि रक्षा करे,
मानें कछुक न खेद, सत्यव्रत मनु सुख भरे।
केशव अनुपम मीन, जय जगदीश हरे ॥ १ ॥
कठिन सु-पीठ विशाल. गिरि मंडल तापर लसे,
दिव्य सु-दीठ रसाल, लोक चक्र जा पर बसे।
केशव कच्छप रूप, जय जगदीश हरे ॥ २ ॥
दशन शिखर पर वास, सहज करायो धरनिकों,
मनहु चन्द्र छविभास, दीखत शोभा वरनिको।
केशव देव बराह, जय जगदीश हरे ॥ ३ ॥
श्रीकर कमलन बीच, नखमनु अद्भुत सींग हैं,
हिरनकशिपु कों खींच, फारयो उदर जु धींग है।
केशव श्रीनरसिंह, जय जगदीश हरे ॥ ४ ॥
बलि छलिबेके हेत, श्रीउपेन्द्र नामहु धरे,
सर्व शुद्धि कर देत, जो जल पद नख सों ढरे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केशव वामनवेश, जय जगदीश हरे ॥ ५ ॥
क्षत्रिय रुधिर तडाग, कितने भर परघट करे,
किये तहाँ पुनि याग, न्हान करत पापहु हरे।
केशव परशूराम, जय जगदीश हरे ॥ ६ ॥
लंकेश्वर दशशीश, रन में काटे बान सों,
किये सहायक कीश, दश दिश बलि प्रदान कों।
केशव दशरथ राम, जय जगदीश हरे ॥ ७ ॥
रोहिनिनन्दन वीर, नाग सुता संग रास किय,
खेंच्यो जमुना नीर, अवगाहन उल्लास हिय।
केशव हलधर राम, जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥
पशुहिंसा लखि आप, बेदहु की निन्दा करी,
दयासिन्धु हर ताप, सुगत विशारद श्रीहरी।
केशव बुद्ध शरीर, जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥
म्लेच्छ समूह विनाश, हेतु लेंहि तरवार कर,
कलिमल करि हैं नाश, धर्म सनातन धार हर।
केशव कल्कि स्वरूप, जय जगदीश हरे ॥ १० ॥
श्रीजयदेव उदार, रामराय भगवान धन,
देंहि सहज भवतार, होय जोय अनुराग मन।
केशव दशविधि रूप, जय जगदीश हरे ॥ ११ ॥

कवित्त—वेदको उधार्‌यो पीठ भूधर सम्हार्‌यो भूमि,
मंडल को दंत धारि हिरना कों मार्‌यो है।
बलि के छलैया क्षत्री वंश के दलैया लंका-
पति के मिटैया रघुनाथ रूप धार्‌यो है ॥
कालिन्दीकर्षन कृपावर्षन सुदीनन पै,
म्लेच्छ अघमर्ष कलिकल्मष प्रतार्‌यो है।
ऐसे दशरूप धारें हारें सब भूमि भारें,
रसिक बिहारें कृष्णचन्द्र जग तार्‌यो है ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

द्वितीय प्रबन्ध

अष्टपदी

श्रीराधिका उरोजरँग, रंजित कुण्डल धारु।
जय-जय देव हरे हरे, वनमाला उर चारु ॥ १ ॥
दिन मनि मंडल मंडना, भवभय करि विध्वंस।
जय-जय देव हरे-हरे, मुनिमन मानस हंस ॥ २ ॥
कालिय विषधर गंजना, जनरंजन प्रिय देश।
जय-जय देव हरे-हरे, यदुकुल नलिन दिनेश ॥ ३ ॥
मधु मुर नरक विनाशना, गरुड़ासन भगवान।
जय-जय देव हरे-हरे, सुरकुल केलि निदान ॥ ४ ॥
अमल कमल दल लोचना,भवभय मोचन ध्यान।
जय-जय देव हरे-हरे, त्रिभुवन भुवन निधान ॥ ५ ॥
जनकसुता कृत भषणा, जित दूषण खरवीर।
जय-जय देव हरे-हरे, हत दशकंठ शरीर ॥ ६ ॥
नव जलधर सुन्दर सुवपु, धृत मन्दर वरज़ोर।
जय-जय देव हरे-हरे, राधावदन चकोर ॥ ७ ॥
तव पद पल्लव प्रणति है, भक्त भूप घनश्याम।
जय-जय देव हरे-हरे, कुशल करहु अविराम ॥ ८ ॥
श्रीजयदेव कवीशकृत, उज्वल मंगल गीत।
रामराय भगवान हित, गावत परम पुनीत ॥ ९ ॥

कवित्त—बासन्ती कुसुमन समान सुकुमार अंग,
बृन्दावन भूमी भ्रमत कृष्ण अनुसरै।
पीडित अमन्द कन्दर्प के प्रचंड वेग,
चिन्ता अति चिन्तित बिचित्र ज्वर कों धरै॥
आई सखि पास सुखराश की विलास कथा,
कहिकें किशोरी के दुरन्त दुख को हरै।
सोई जयदेव हरि राधा तन बाधा हरे,
वर्णन सों आनँद उमंग झरना झरै॥ २॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तृतीय प्रबन्ध

दोहा—ललित लवंगलता मिली कोमल मलय समीर।
मधुकर सहचर कोकिला कूजत कुंज कुटीर ॥ १ ॥

पद—ऋतु वसन्त विहरत गिरिधारी।
विरही विरह हरण कर्ता हरि ! चल वृषभानु दुलारी ॥
उन्मद मदन मनोरथ डूबी पथिक वधूजन जनित विलाप।
अलिकुल संकुल कुसुमा वलिजहाँ व्याकुल दीखत वकुल कलाप।
कस्तूरी सम सुरभित शोभित नवल नवल दल माल तमाल।
जुव जन हृदय विदारण कारण काम नखाकृति केशर जाल ॥
मदन महीपति छत्र तनायो सो जह केशर कुसुम विकास।
फूल गुलाब मिले भौंरा मनु कामदेव के तरकस पास ॥
करुण वृक्ष के कुसुम करत हैं खिल २ निर्लज्जन कौ हास।
कुन्त शस्त्र सम दीखत केतक कुसुम वसन्त वने वनबास ॥
ललित सुगन्ध माधवी लतिका मालति जाति अनूपम पास।
मुनिजन मन की मोहनकारी सहज मित्र जुवजन अभिलास ॥
वासन्ती के मिलत भयो है मंजरि मनु रोमांच रसाल।
चहुँदिश पुलिन उछाह मचोहै श्री वृन्दावन जमुना नाल ॥
श्री जयदेव वसन्त सुनायो राधा माधव सुमिरन सार।
रामराय अद्भुत सुख पायो जुगल सिंगार अनंग विहार ॥ १ ॥

चतुर्थ प्रबन्ध

वने आज नंदलाल सखी प्रेम मादक पिये,
संग ललना लियें यमुना तीरे।
फूली केशर कमल मालती सघन वन मंद।
सुगंध शीतल समीरे ॥ १ ॥

नील मणि वरन तन कनक मंडित वसन,
परम सुन्दर चरण परस माला।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुर मृदु हास परकाश दशनावली,
छवि भरे इतरात दृग विशाला ॥ २ ॥
किये चंदन खोर वदनारविंद मकरंद लुब्ध,
भ्रमर कुंटिल अलकें।
हलत कुंडल लटक चलत जब श्यामघन,
मणिन की कांति कल गंड झलकें ॥ ३ ॥
एक चम्पक तनी कृष्ण रस मत्तनी,
करे राग पंचम लागि सोहें।
एक हरि मुख निरख धर रही ध्यान मनु,
चित्र सम भई हरि हिये मोहें ॥ ४ ॥
एक दामिनी सी भुज मेलि ग्रीवा वात कहन,
मिस मुखसों जु मुख मिलायो।
एक नव कुंज में खेंच रही कटि वंध,
आपनों लाल चित चोर पायो ॥ ५ ॥
एक श्यामहि हेरि सुभग लोचन फेरि,
विहँस बोली भले कान्ह कपटी।
एक सोंधे भरी छुटे वारन खरी,
एक विन कंचुकी रीझि लपटी ॥ ६ ॥
एक स्यामा कनक कंज वदनी,
प्रेम मकरन्द भरी हरि निरख विकसी।
ताके रस लुब्ध रहे लपट शामरो भ्रमर,
प्रान प्यारी भुजन वीच जु लसी ॥ ७ ॥
रसिक मनि रंग भरे विहरत बृन्दा विपिन,
संग सखी मंडल प्रेम पागी।
कहत भगवान हित श्रीरामराय प्रभु।
सोई जाने जाहि लगन लागी ॥ ८ ॥

इति श्री गीतगोविन्द प्रियायां
प्रथमः सर्गः समाप्तः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्री राधाकुंजविहारिणे नमः

द्वितीयः सर्गः (पचम प्रबन्ध)

सवैया—कृष्ण को प्रेम समान सभी ब्रज गोपिन में जब रास रचायो,
श्री वृन्दावन कुंज लता वलि, पुंज मधुव्रत गुंच मचायो।
ईरषा प्यारी के चित्त भई पिय,प्यार न अन्य के संग सुहायो,
छोड़ि गई छिप कुंजन में पुनि दुःख को हाल सखी को सुनायो।

पद—वंशी वारे को ध्यान लग्यो मन भारी।
अधरामृत सों बढ़ी माधुरी धुनि पूरित दिश चारी ॥ टेक ॥
सकल लोक को मोहन कर्त्ता चंचल नैन बजावै भर्त्ता।
चपल कपोल ललित कुंडल शिर मुकट हँसी मुख न्यारी ॥१॥
सुन्दर मोर पंख कंकन छव केश पाश गूंथे निज माधव।
इन्द्र धनुष ज्यों श्याम घटा में तैसे लगत बिहारी ॥ २ ॥
ब्रज रमनी मुख चुंबन लोभी, बिम्वाधर कोमल दल छोभी।
मन्द मन्द मुसक्यान प्रान धन जीवन कृष्ण मुरारी ॥ ३ ॥
नवल बसन्त कल्प पल्लव से गोपी आलिंगन कर हरसे।
तन आभूषन मनि किरनन सों अन्धकार भय हारी ॥ ४ ॥
नव घनश्याम घटा चल चंदा माथे मलयज चन्दन बिन्दा।
विस्तृत हृदय पुष्ट कुच मर्दन निर्दय करत सुधारी ॥ ५ ॥
मनि मकराकृत कुंडल मोहें भक्त मनोरथ पूरक सोहें।
मुनि मनुष्य सुर असुर चराचर पति पीताम्बर धारी ॥ ६ ॥
कोमल कदम तले मिलपाये हृदय नैन सों मोहि रमाये।
कलि कल्मष नसि इन्द्र दमन प्रभु ब्रज रक्षक गिरिधारी ॥ ७ ॥
श्रीजयदेव रचित सुन्दरतर कृष्ण केलि लीला रस सागर।
रामराय पद सुमिरन कर्त्ता भक्तन को सुखकारी ॥ बंशी० ॥ ८ ॥

इति पंचम प्रबन्ध समाप्त

सवैया—रास मिलीं बनिता अभिलाष लखें मन में अति दुःख हू पाऊं।
तोहू पिया सुख चाहत हों अपराध भये पैहु नाहिं रिसाऊं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

मोहि तजी तिन और भजी अपमानको ध्यान न चित्त बसाऊं।
किन्तु प्रसन्न भई मुख सों निज कुंजबिहारी गुणावलि गाऊं ॥

अथ षष्ठ प्रबंध प्रारम्भ

पद—मिलावोसखीश्रीकुंजविहारीसंग।
मदन मनोरथ मधुर हास केशी मर्दन नव रंग ॥

मौन निकुंज भवन में आई छिपकर तिन एकान्त रमाई।
मंद हसन बोलन विलास वश लज्जा प्रथम प्रसंग ॥१॥

चतुर शिरोमनि करत प्रशंसा जघनदुकूल हटावन मंसा
कोमल दल शैया मुख चुम्बन आलिंगन रस जंग ॥ २ ॥

अधिक समय वक्ष: स्थल ऊपर सोवत पीवत घूंट सुधाधर।
मदनानन्द वन्द भये लोचन आलस भरयो अनंग ॥ ३ ॥

तेहि श्रम स्वेद विन्दु भीग्यो तन पुलकित गोल कपोल लोल मन।
नवमद मदन अमंद चन्द मुख सुख पावत जु सुधंग ॥ ४ ॥

कोकिल सम अस्फुट रति वानी, वैनी शिथिल फूल श्रम जानी।
कुच कठोर नख चिन्ह करैया कोक कला उत्संग ॥ ५ ॥

पग नूपुर कटि किंकिन वाजे, केलि कलह परि पूरन गाजे।
केश पाश कर पकर अधर धर सुधा पान अरधंग ॥ ६ ॥

रति सुख रस आलस मुरझाई, मनो तमाल वेल अरुझाई।
प्रेमानन्द ध्यान योगी सम उदय भयो प्रत्यंग ॥ ७ ॥

श्री जयदेव कवीश्वर गायो, श्री राधा के मुख कहवायो।
रामराय उत्कंठित रतिकौ गीत रीत सर्वाङ्ग (मिलावो०) ॥ ८ ॥

[षष्ठ प्रबंध समाप्त]

स०—मोहि लखे जिनके करसों मुरली लकुटो दोउ भूमि गिरी री,
भौंहैं कमान सी वान कटाक्ष सुदक्ष ब्रजाङ्गना देखें खरी री।
भीजे कपोल पसीना को बूँद अहो जह लाज सुहास भरी री,
कृष्ण मुखाम्बुज देख सखी में तो आनंद सिन्धु में बूड़ी परी री॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नव्य अशोक लतान के गुच्छ खिले कुसुमोखर के तट पे,
बाग सुहाग भरे तिन वायु सुशीतल मंद सुगंध झपे।
श्री गिरिराज पै आम के वृक्ष अली कुल गान करें तिनपे,
हे सखि कृष्ण वियोग के दुःख में अंग अनंग महान तपे ॥ २ ॥
भाव भरी मुसकान सों देखत गोप वधू कुच हाथ औ वैनी,
ताही समें सों धरी हिय ध्यान में सुन्दरि राधिका खंजन नैनी।
नाहि प्रियासम काहू त्रिलोकी में मोहत ध्यावत हैं पिक वैनी,
भक्तन को सब क्लेश हरें वे ही कृष्ण किशोर सु मूरति मैनी ॥ ३ ॥

श्री देव देव जयदेव कवीश गायो।
श्री कृष्णचन्द्र मांहिमामृत सिंधु छायो ॥
श्री रामराय तिनके पद कंज पूजो।
अक्लेश केशव भयो जह सर्ग दूजो ॥ ४ ॥

इति श्री गीत गोविन्द कर्तृ श्री जयदेव कविराज राजेश्वर-
वंशोद्भव श्रीरामराय गोस्वामि प्रभु प्रणीत-
श्रीगीतगोविन्द प्रियायां-
द्वितीयः सर्गः।

श्रीराधा विहारिणे नमः
तृतीयः सर्गः।

दोहा—जगत वासना बाँधिवे हित जग के करतार।
त्याग दई ब्रज सुन्दरी श्री राधा के प्यार ॥ १ ॥
श्री राधा को खोजते पीड़ित बिरह विकार।
जमुना तीर निकुंज में करत अनेक विचार ॥ २ ॥

(सप्तम प्रबन्धः)

पद—मोकों कहां गई तजि प्यारी।
सखिन समूह मध्य वैठ्यो लखि निज अपमान विचारी ॥ टेक ॥
जा कर्तव में हों अपराधी, भय सों रोक न सक्यो विसादी।
महा मानिनी कहा सहेगी क्रोधानल चिनगारी ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब तिन विना न धन जन भावे, भवन प्रान वन सघन सतावे ।
मूल गये पुनि डार पात की बात होय बेकारी ॥ ३ ॥
लाल कमल दल अलि जो गाजे, ध्याऊँ वंक भृकुटि मुख राजे ।
हृदय विराजी कों जो भोगू' तो बन विलप बृथारी ॥ ४ ॥
हेतन्वंगि जिही अनुमानू , ईर्षा दुखित चित्त तब जानू ।
और आप अपनी जानत हो विनय सुनों सुकुमारी ॥ ५ ॥
सन्मुख इत उत देत दिखाइ, मिलो न क्यों पहिले की नाईं ।
क्षमा करो अब न करू' ऐसो रति पीड़ित लखि भारी ॥ ६ ॥
किन्दु विल्व वासी जय देवा, करें रोहिणी जिनकी सेवा ।
रामराय जह दूजी नारी कृष्णदेव महतारी ॥ मोको० ७ ॥

सप्तम प्रबन्ध समाप्त

सवैया—हार मृडाल जि सर्प नहीं गल नील सरोज हलाहल नाई
प्यारी वियोग की शान्ति के हेत है चन्दन पंक न भस्म रमाई
वैर पुरानों निकारन कों भ्रम सों तुम मोपे करी है चढ़ाई
शंकर योगी न जानों हमें पर कृष्ण श्री राधा वियोगी हूँ भाई
खेल सों विश्वविजेता हे काम न आम की मंजरी वान चलाओ
मूर्छित मारन में न वली तुम तासों दयाकर प्रान बचाओ
राधिका चंचल नैन कटाक्ष की अग्नि शिखा के जरेकों जराओ
चित्त न स्वस्थ है मेरो सखे करि शीतल ताप न नेंक बढ़ाओ
हेरतिनाथ ! कहो जो न मेरो कछू अपराध प्रियाजी को जानो
क्यों तुम शस्त्र दिये उनकों भृकुटी धनुवान कटाक्षु बखानो
कान की पोर बनी धनुडोर जो जोर सों विश्वविजै हित वानो
खेल हमारे बताय रहे विन शस्त्र न वीर कोई पहिचानो
बान सुभाव लगे दुखदेत कटाक्ष धनू भृकुटी पै नचाओ ।
ऊपर भीतर कारे ओ टेढ़े ये केश के पास हू काम जगाओ ॥
रागी तथा विषयी जह मोह बढ़ामें बिम्बाधर सोहू बढ़ाओ ।
किन्तु सुजान कुचा रस सान क्यों प्रान हमारे हरे ये बताओ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कवित्त—सुन्दरी के संग होय वेही जो परस सुख
चंचल कटाक्ष मुख पंकज सुगन्ध है ॥
अमृत परिपूर्ण व्यंग बानी अधर लाल
माधुरी में रूप रस पर्श और गन्ध है ॥
मेरो मन विषयन ओर जोर लागते हू
मेरी प्यारी राधाजू के ध्यान में अमंद है ॥
योगी ध्यान वेदना न पावत समाधी बीच
मोको ये क्यों बार २ भारी दुख द्वन्द है ॥ ५ ॥

सवैया—बाजत बांसुरी गान पदावलि चित्त लगे नहि गोपी निहारें,
सुन्दर राधिका श्री मुखचंद्र कों गुप्त सरूप सों भाव में धारें।
ग्रीवा को टेढ़ी करेंते सुमार के पिच्छ औ चंचल कुंडल चारें,
कृष्ण कटाक्ष की पाति सौ भांति सभी निज भक्तन मंगल सारें।

छन्द—कविराज श्री महाराज श्री जयदेव कविता रस भरी,
महिमा कहे गो कौन श्री जयदोश की बानी खरी।
जह सर्ग तीजो है गयो श्री रामराय सुधाझरी,
श्री मुग्ध मधु सूदन धरयो एहि नाम भरकें माधुरी ॥ १ ॥

इति श्री सारस्वत द्विज मुकुट मणि-
श्री जयदेव कविराज राजेश्वर कृत श्री गीतगोविन्दे
तद्वंशज श्री रामराय गोस्वामि प्रणीतायां
श्री गोविन्द प्रियायां-
तृतीय सर्गः
समाप्तः

श्रीराधाकुंजविहारिणे नमः।

चतुर्थ सर्गः।

दो०—उदासीन बैठे भये कुंज कलिन्दी तीर।
प्रेम वेग उद्विग्न मन माधव महा गंभीर ॥ १ ॥
ताही वेतस लता गृह आई अति अभिराम।
कहत राधिका को सखी सुनिये सुन्दर श्याम ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(अष्टम प्रबन्ध प्रारंभ)

पद—हे माधव तब विरह किशोरी

मदन वान भय करन भावना मानों कृष्ण रस वोरी ।।टेक ।।
चन्दन की भाखत है निन्दा, शीतल किरन तेई बिध चन्दा ।
सर्पश्वास विष मिली मलय की पवन देत दुख घोरी ।। १ ।।
रति पति के तीखे शर भय सों, चाहत लाग्यो तुम्हें हृदय सों ।
मर्म कवच सम कमल दलन को जल भिजोय रख भोरी ।। २ ।।
आलिंगन सुख वहु विधि जोवत, काम नाम शरशैया सोवत ।
व्रत करि रही महा जोगिन तन विरह अगिन नहिं थोरी ।। ३ ।।
राहु दन्त सों दलित चन्द्रमा, राधा मुख शशि विरह सान्द्रमा ।
सुधा धार जनु अश्रु झरत हैं जह दुख कठिन कठोरी ।। ४ ।।
मदन रूप तब मृगमद चित्रा, आम मंजरी हाथ विचित्रा ।
व्याकुल लिख्यो मकर नहि ऊपर नीचे नख कर जोरी ।। ५ ।।
इत उत भ्रमत कहत हे माधो, परी चरन तल मम हित साधो ।
विमुख भये अमरत तन चन्दा जारत कर वर जोरी ।। ६ ।।
मुनि दुर्लभ तव ध्यान जु धरकें, मूरति मान कल्पना करकें ।
हंसत विसाद करत अरु रोवत आलिंगन सुख गोरी ।। ७ ।।
श्री जयदेव काव्य रस चाहो, तो जह विरह सुधा अव गाहो ।
व्याकुल राधा सखो वचन पढ़ि रामराय व्रज खोरी ।। ८ ।।

कवित्त—आपके वियोग मनि मन्दिर विजनवन,
प्यारी सखी जाल के समान लगती रहे ।।
कन्दरप सिंह और जमके समान लगे,
श्वासन की गर्मी सो दवाग्नि झकती रहे ।।
राधा भै हिरनी सो वचावे प्रान कौन रूप,
ध्यान और सन्मुख तुम्ही को रखती रहे ।।
प्यारे मिल लेहु जो भलाई कछु चाहो निज,
प्यारी प्रान त्यागेगी न जामें नैक भीर है ।। १ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(नवम प्रवन्ध प्रारम्भ)

टेक—सुनहु असाध्य दशा सुकुमारी

छीन शरीर वियोग तिहारे हीर हार उरजन पर भारे
चिकन मलय चन्दन शीतलता विष समान तजि डारी १
श्वास चलत कामानल धारे नाल विना चखि कंज करारे
आंसू झरत करत तब आशा आवत नांहि विहारी २
लाल कमल दल कोमल शैया, होत संदेह अंगार विछैया
करतल गोल कपोल वाल शशि राखि बिचिन्तित भारी ३
अन्त समे जेहि जप तेहि पावे, जह जिय जान कृष्ण हरि गावे
जा तन नहीं जन्म दूजे में मोहि मिलें गिरिधारी ४
कृष्ण पदाब्ज निवेदन कीनों सुखद भक्तजन को रस भीनो
श्री जयदेव कवीश्वर करुना रामराय वलिहारी ५

(नवम प्रवन्ध समाप्त)

सवैया—स्वर्ग के वैद समान बिहारी जू रोगिन राधा को हाल सुनाऊं
काम को ताप वढ़यो है विलाप करे मुख शीशी कभू सुनपाऊं
कंपित गात भयो पुलकात भ्रमात है ध्यान औ ग्लानि वताऊं
नैनन मूंदि गिरे धरनी उठ मूर्छित होत सो हाथ उठाऊं १
लच्छन जेते त्रिदोष के हैं सब और दवाई में जानत नाऊं
वोलत नाहि संकेत करे सोहू थोरी सी वार में दीखे मिटाऊ
आप पधारो करो उपचार हेकामरसेश जनाओ न काऊ
दीजिये दर्शन राधिका जीवन लौटे तेही छिन हों वलि जाऊं २

दोहा—अंग अलिंगन साध्य जो, जीवन राधा प्रान।
जो न जिवाओ वैद्य तुम, कठिन वज्र पाखान॥
रति ज्वर चन्दन चन्द्रमा, कमलिन ध्यान दुखात।
प्रेम अलौकिक आश तब, सुमिरन प्रान वचात॥
कल न परत पल पलक लगि, विन देखें मुखचन्द।
लखि बसन्त ऋतु मंजरी प्रिया विरह दुख द्वन्द॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सवैया—वर्षा सों व्याकुल गोकुल राखिवे श्रीगिरिराज धरयों गिरिधारी
हाथन चूमत गोपी सवे तिन होठ की लाली भली जयकारी
कंस विध्वंस प्रशंसित श्री ब्रजराज किशोर विपत्ति निवारी
रक्षा करें सब भक्तन की भवभीत के भंजन कुंज विहारी

श्री देव देव जयदेव कवीश चायो।
गोविन्द गीत रस सागर सो वहायो॥
श्री रामराय अनुवाद सुभक्त भायो।
सुस्निग्ध माधव चतुर्थंजु सर्ग गायो॥

इति श्री जयदेव भगवद्वंशोद्भव श्री रामराय गोस्वामी प्रणीत
श्रीगीतगोविन्द प्रियायां चतुर्थः सर्गः।

श्रीराधा कुंजविहारणे नः।

पञ्चम सर्गः

छन्द—हे सखी! तुम जाय प्यारी सों कहो समुझायकें,
में रहूँ जा कुंज में तब तक मिले माहि आयकें।
जा विधि बिहारी की पठाई दूतिका नें जायकें,
श्री कृष्ण को सन्देश राधा सों कह्यो हरसायकें॥ १॥

(दशम प्रबन्धः)

पद— श्रीराधे तब वियोग बनमाली।
काम सहाय बनाय मलय की वायु बहत दुख शाली।
बिरहो हियो विदारन कारन कुसुम कली किलकारी,
पीडा मरन समान देरही चन्द किरन चिनगारी।
भमर गुंज नहि सुनत बिरह में निश तन दशा विमारी,
गहवर वन में वास करत हरि धरनि शयन गिरिधारी।
राधे राधे बोलत बिलपत सुन जीवनधन प्यारी,
बिरह बान बरसत ऊपर सों बिलपत बिकल बिहारी।
कोकिल कूक सुनत चहुँ दिश में ज नत तब मुख बानी,
हँसत लोग सब दशा देख जह पुनि लाजत मनमानी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

याद होत रति शब्द सुनत सुन्दर पद्मिन की भाषा,
सुरतानन्द होय अनुभव तब करत तासु अभिलाषा।
राधे राधे नाम कोऊ तिन सन्मुख सहज बखानें,
तब सब सों तज प्रीति पियारो नाम सुनत दे कानें।
श्रीजयदेव कवीश्वर हरि के विरह विलास उचारे,
रामराय जा पुण्य तिन्ही के प्रगट होंय हिय प्यारे॥ १॥

(दशम प्रबन्ध समाप्त)

सवैया--जा नव कुंज चलो पहिलें रति संगर सिद्धि मिली ही सुखारी
ता रति तीरथराज विराज निशा दिन नाम जपें बनवारी
चाहत कंचन कुंभ कुचा परिरंभन रूप सुधा रसधारी
ज्यों मुनि ईश्वर ध्यान धर अणिमादिक मात्त का चाह विचारी

(एकादश प्रबन्ध प्रारम्भ)

पद--- चलहु किन मानिनि जमुना तीर

सुनहु नितम्बिनि बिलम न कीजे बिलसत धीर समीर,
मदन मनोहर वेश बिहारी प्राननाथ तब श्री गिरिधारी।
गोपी पुष्ट कुचन कों मीड़त दोनों हाथ अधीर॥ १॥
राधा नाम जपत मुरली में, मधुर-मधुर मनहर स्वर धामें
तब पद पंकज धूर पवन संग पाय होत वे पीर॥ २॥
पंछि उड़त तिन मद उत्कट सों, पत्तन की खर २ आहट सों
जान आगमन सेन समारत कोमल कुंज कुटीर॥ ३॥
करत शब्द नूपुर तज दीजे, शत्रु समान न इनको छीजै।
अँधयारी कुंजन में चलिये, धार नील नवचीर॥ ४॥
मेघाडम्बर में बक पांती, हीरहार ताविधि हरि छाती।
रति विपरीत वनों विज्जुत सम, श्री गौराङ्ग शरीर॥ ५॥
दल शैया ऊपर हरि संगी, वसन करधनी तज नव रंगी।
जघन जघन कटि तट मिल भेटो, पियो रसासब वीर॥ ६॥
कृष्णचन्द्र भारी अभिमानी, रुष्ट होंहि कछु दरो आनी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीते रात न हाथ परे कछु, मदन मनोरथ छीर ॥ ७ ॥
राधा माधव सेवा को फल, भई दया मो ऊपर उज्वल ।
श्रीजयदेव रचित अति सुन्दर, गायो गीत गंभीर ॥ ८ ॥
परम प्रसन्न प्रानपति लीला, पुण्य किये पावत नहिं हीला ।
रामराय सँग भक्त वृन्द मिल, नबहु कृष्ण पद धीर ॥ ९ ॥

(एकादश प्रवन्ध समाप्त)

सवैया—काम की पीड़ा सों पीड़ित माधव श्वास लियें दिश देश निहारें
कुंज सों बाहिर आवत जात सु होठन में कछु बात उचारें ॥
दुःखित है पुनि आश करें पुनि भीतर है पर्यङ्क सम्हारें
व्याकुलता की कहा कहिये जह देखत राधिका वेग पधारें ॥
राधे जू मान भरे वचनामृत पाय दिवाकर अस्त भयो है
गोविन्द जू के मनोरथ पूरन हेतु चलोजु अभी समयो है
जे चकई चकवा के समान विने भर वाक्य को सार गयो है
होय मिलाप मिटे सब ताप में जाही के हेत जि गीत कह्यो है
जात संकेत निकेत के बीच अन्धेरे में एक अन्धेर नयो है
चाहत जाहि न सो तो मिल्यो भ्रम अन्य सों अन्य मिलाप भयो
प्रेम आलिंगन चुम्बन रेख नखक्षत भोग विलास छयो है
बोलत बोध पिया पिय को रस कौन सो लाजनें नांहि दयो है
राह अँधेरे डरीं कर चंचल नैन निहारत वृक्ष के नीचें
ठैरत जात चले रतिनायक अंग में व्यापि रही रससीचें
देखत तोहि संकेत निकेत वनें बढ़भाग सुहाग की कीचें
देर करो न धरो पग वेग निहारें पिया पिय रंग उलीचें ।
राधिका मुग्ध मुखाम्बुज के अधरामृत पान भये भ्रमरें
तीनहुँ लोक के मौलि वृन्दावन वेश सु नीलमणी की तरें
भार उतार समर्थ व्रजाङ्गना चित्त प्रसन्न प्रदोष करें
कंस विधंस को पुच्छल तारे श्रीदेवकी नन्दन रक्षा करें ॥

दोहा—कवि नृप श्री जयदेव को हृदय महा रस सिन्धु ।
रामराय तिनकी दया तृप्त भयो इक विन्दु ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभिसारक वर्णन जु साकांक्ष पुण्डरीकाक्ष।
सर्ग पांचमों पूर्ण भौ श्री हरि कृपा कटाक्ष॥ २॥
इति श्रीसारस्वतकुलाब्धि कौस्तुभ श्रीमद्भगवद्वतार
श्री जयदेवप्रभुवरवंशोद्भव श्रीरामराय गोस्वामि प्रणीत
श्री गीत गोविन्द प्रियायां
साकाङ्क्ष पुण्डरीकाक्षो नाम पंचमसर्गः समाप्तः।

श्री राधा कुंजविहारिणे नमः
(अथ षष्ठ सर्गः)

दोहा—पंगु भई अनुराग वश चलन सकत अरदास।
श्री राधा को चरित सखि कह्यो कृष्ण के पास॥

(द्वादश प्रवन्ध)

पद— हे हरि जय जय होय तिहारी।
निज अधरामृत पीवत देखत तुमहि राधिका प्यारी॥ टेक॥
चहुँदिश देख निकट तव आवत गिर गिर परत दुखारी।
दुर्वल विरह वेदना सों भई प्यारे तेरो प्यारी॥
कमल नाल अरु दल के कंकण पहिर रही जु विचारी॥
केवल रति रस रंग लालसा आशा जीवन धारी।
निज आभूषन के विलास लखि बोलत बारंबारी॥
तुव समान रचि वेश कहत है में हूँ कुंज बिहारी।
क्यों नाही संकेत पधारत मेरे मन के हारी॥
अंधकार कों तुम्हें समझि आलिंगन चुम्वन धारी।
वासक सज्जा तुमहि न देखत विलपत निलज पुकारी॥
श्री जयदेव कवीश्वर बानी रसिकानन्द प्रचारी।
छन्द—हृदय काम चिन्ता सों व्याकुल ध्यान मगन भई भारी।
जानत अंग लग्यो मम प्यारो रोमांचित सुखकारी॥
तेही समय अधर चुम्बन अरु नख क्षत मन में धारी।
शीशी करत भई जड़ विह्वल डूबी रस निधि वारी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पत्तन की खर खर सुन राधा समुझि आपकों आयो ।
कर पद धर आभूषन सुन्दर फूलन शयन सजायो ॥
कर अनेक संकल्प विकल्प हि कियो मतो मन भायो ।
रात गए जीवे नहिं जीवे सो न समझ में आयो ॥
सुनों पथिक भांडोर भूमि में रहे सर्प इक कारो ।
जासों श्रीनन्दालय सुन्दर तामें आप पधारो ॥
जान गए गोपीजन बल्लभ ता छिन वचन उचारो ।
धन्य २ महाराज आप यहां सुख सों समय निकारो ॥
दोहा—सोतकंठ बैकुंठ जह षष्ठ सर्ग भयो पूर
रामराय जयदेव प्रभु वानी आनंद मूर ॥

इति श्री जगदीशावतार श्री जयदेव गोस्वामी प्रभु वंशोत्पन्न,दार्शनिक सार्मभौम श्री रामराय प्रभु प्रणीतायां श्री गीतगोविन्द प्रियायां षष्ठः सर्गः समाप्तिमगात् ।

श्रीराधा कुंजविहारिणे नमः

(अथ सप्तम-सर्ग प्रारम्भ)

सवैया—इच्छानुसार करें अभिसार जो नार तिन्ही के निवारन कों
शाप लग्यो सो प्रतच्छ जग्यो तन अंक कलंक निशातन कों
पूर्वदिशा रमनी मुख पंकज सोहत विन्दु सुचन्दन कों
अंशु समूह प्रकाश कियो अरुन द्युति चन्द वृन्दावन कों
दोहा—चन्द छटा ऊपर छई देरी कृष्ण मिलाप ।
तब अनुराग वियोगिनी राधा करत विलाप ॥

"त्रयोदश प्रबन्ध"

पद—रे मन वन न मिले वनमाली ॥ टेक ॥
अचरज खेद जिही मम जोवन जात विफल दुख घाली ।
आये मोहन कह कह मोकों करत वंचना आली ।
अब विश्वास न काहू को मोहि मरूं डूब जल चाली ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

...भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

जा प्रिय हेत अन्धेरी निशा में वसी सघन वन भारी।
लगे काम के गाढ़ वान हिय नित मोहि करी दुखारी।
ज्ञान शून्य भई विरह दवानल जारत जरी भई कों॥
जह तन जाउ भले सुख मोको और न भावत जी कों।
दुख की बात वसन्त रात पिय विन विहाल निकरें हैं॥
पुण्य शालिनी गोपवधू कोउ ले आनन्द करे हैं॥
हाय हाय मनि कंकन भूषन दूषन सम हैं मोकों।
महा कठिन विरहानल तापित अव हरि कहां विलोकों॥ ५॥
काम देव शर कुसुम माल गल वान समान लगे है।
कामो द्दीपक फूल अंग तन तिनसों मदन जगे है॥ ६॥
वेतस वन को लता पता परि कियो सघन बन वासा।
वे पिय याद न करें मोहि अव दूर आगमन आशा॥ ७॥
सुमधुर कल संगीत कलामय अद्भुत नव रस राशी।
श्री जयदेव कवीश्वर वानी भक्ति सुधानिधि खाशी॥ ८॥
रसिक हिये सोलह सिँगार जुत वसत नायका जैसें।
रामराय भावुक मन मन्दिर वसहु गीत जह तैसें॥ ९॥

"त्रयोदश प्रवन्ध समाप्त"

सवैया—केलि कला कुल कामिन कोऊ कलंकिनि कृष्ण किशोर हमारे।
राखे नहीं ता रहे निज बन्धुन हास विनोद में नन्द दुलारे॥
या घन घोर निशा पथ भूल रहे मोहि खोज वियोग दुखारे।
मंजुल वंजुल कुंज संकेत वताय बनाय न फेर पधारे॥ १॥
माधव लेन गई कोऊ दूती विना ही लिये पुनि लौट कें आई।
दुःखित मौन अकेली लखी तव पूछत तासों जु रोष भराई॥
का कोऊ गोप वधू में रमे मोहि वात न भावत ऐसी पराई।
नित्य लेखों नहिं शंक कछू वेतो ढीठ भये कर पीठ रुखाई॥२॥

(चतुर्दश प्रबन्ध प्रारम्भ)

हे सखि सुन मधुसूदन वात।
सौतिन संग विलास करत हैं मो संग कीनी घात॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हमसों अधिक सरस गुन वारी, सुरत समर आभूषन धारी।
रति विपरीत कुसुम झर ढीली वैनी चपला गात ॥ १ ॥
हरि आलिंगन काम विकारा, रति विपरीत हलत कुच हारा।
चंचल मुख शशि अंचल अलकें अधर सुधा अलसात ॥ २ ॥
कुंडल रगड़ कपोल घिसाये, हलत कर धनी जघन हलाये।
हरि कटाक्ष लज्जित रति कूजित वहु विध रस मुसकात ॥ ३ ॥
रति आनन्द पुलक कंपित तन, गद्‌गद स्वर गाढ़े आलिंगन।
काम भाव प्रफुलित मृगलोचन मींचत हिये सिहात ॥ ४ ॥
सुरत परिश्रम स्वेदविन्दु तन, कियो कृष्ण वक्ष स्थल आसन।
रति रन धीर धरें प्यारे मिल संभोगिन सुख पात ॥ ५ ॥
कृष्णचन्द्र संभोग सुशीला श्री जयदेव कही हरिलीला।
श्रोता जन के कलि कल्मस हर रामराय जिय भात ॥ ६ ॥

(चतुर्बश प्रवन्ध समाप्त)

सवैया—हे सखि मेरे वियोग में पीतम पीत भये तिनकी छविधारी
श्री मुख पंकज की समता जह काम को मित्र करे सुख कारी।
मंडल चन्द्र को राजत देत आनन्द सबै ब्रज मंडल भारी
ताहू न मोहि सुहात जा काम की पीड़ा सों पीडित चित्त व्यथारी

(पंचदश प्रबन्धै प्रारम्भ)

पद—वा वन मोहि चलो ले प्यारी।
कालिन्दी तट श्री वंशीवट रमन करत जहां कृष्ण मुरारी
चुम्बन सों संकुचित बिम्बाधर मृगमद तिलक लिखत ता मुखपर
मनहु चन्द में हरिन सौत तन कामोद्दीपन कारी ॥ १ ॥
मेघाडम्बर के सम सुन्दर, युवजन के मन चंचलता कर
काम रूप मृगबन वनिता कच, गूंथत कुरव समारी ॥ २ ॥
कस्तूरी लेपन अकाश से, नख छत मानों शशि प्रकाश से
तारागन सम हीर हार धर कुच कठोर सिंगारी ॥ ३ ॥
कमल नाल सों अतिशय कोमल, नवल गुलाव फूल से करतल
हिम शीतल कर मधुकर मरकत मनि कंकन दिये डारी ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

काम देवता को कनकासन, रति निवास सारी कर धारन।
वन्दन वार समान कर धनो पुष्ट जघन मतवारी ॥ ५ ॥
रमा निवास मनों नख मनिगन, सोहत सौतन के जुग चरनन।
हिय लगाय जावक निज हाथन देत कृष्ण गिरिधारी ॥ ६ ॥
वे हलधर के छोटे भैया, कवन सुनैनो संग न रमैया।
रस सिंगार विना क्यों वैठी आशा करूं निहारी ॥ ७ ॥
जह सिंगार कृष्ण गुन गायक, श्री जयदेव देव प्रभु पायक।
रामराय तिन हृदय कलियुगी पाप हरें जु मुरारी ॥ ८ ॥

(पंचदश प्रबन्ध समाप्त)

सवैया—हे सखि दूति जो निर्दय वंचक कृष्ण हमारे समीप न आये।
क्यों तू दुखी मन में इतनी बहु वल्लभ वे तो सभी सुन पाये।
है वश सुन्दरतादिक के रतिनायक खेद महा बउ राये।
प्रान तो प्रानपती सों मिलें मम अन्त अनन्त को ध्यान लगाये।

(षोडश प्रबन्ध प्रारम्भ)

पद—बनमाली को विरह सतावे।
जो रमनो तिन संग रमी नव दल शैया सुख पावै।
प्रफुलित कमल कृष्ण मुख सों मिल रति पीड़ा न दुखावै ॥
परम मधुर बचनामृत हरि संग मलय पवन पहुनावै।
थल कमलन सम कर चरणाम्वुज मिले चन्द्र हरसावै ॥
सजल जलद सम श्याम पाय पुनि विरह न हृदय दहावै।
पीताम्वर धर भोगवती सखि हास श्वास नहि लावै ॥
त्रिभुवन भवन विहारी प्यारे पुनि पीड़ा क्यों आवै।
है विपरीत सकल दुख आवत मिटे न नैंक मिटावै ॥
श्री जयदेव कवीश्वर वानी जो कोई जन गावै—
रामराय सोई प्यारे कों अपने हृदय वसावै ॥ १ ॥

(षोडश प्रबन्ध समाप्त)

सवैया—काम जगावन हारे अरे मलयानिल वैन सुनो दुख भारे।
होहु प्रसन्न गरीवन पै जग प्रांन के नायक टेढ़ विसारे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक घड़ी मोहि देखन दे करि सन्मुख मोहन नन्द दुलारे।
ता छिन वीते पै देर नही तुम प्रान हरो सुख साध्य हमारे ॥१॥
हे सखि ! कृष्ण के याद करें सखिसंघ सो शत्रु समान लगेरी।
अग्नि के भान भयो मलयानिल चन्द सुधा विषपान लगेरी ॥
काम को टेढो है मत्त प्रभाव निरंकुश है नहि ध्यान लगेरी।
प्रानपती के वियोग विषें जुवती जन शूल प्रमान लगेरी ॥२॥
हे मलयानिल ! देहु व्यथा जितनी मन इच्छा तुमारे जू में है।
काम करो इक काम हरो मम प्रान गयो मन प्यारे जू में है ॥
हे यमुने ! तुमहूँ क्यों क्षमा यमराज की भैन समारे जू में है।
सींचहु अंग तरंगन सों तन ताप हरो जो हमारे जू में है ॥३॥

पद—धन्य श्री गोविन्द पद अरविन्द।
अति आदर पूर्वक प्रसन्न है नमत सकल सुरवृन्द।
मुकुट समूह नील मनि मानों झुके अनेक मलिन्द ॥
जाको रस गंगाजल निर्मल न्हात करत स्वच्छन्द।
श्री जयदेव पापहर गायो सोई गीत गोविन्द ॥
"रामराय" नागर नारायण सप्तम सर्ग अमन्द ॥४॥

इति श्रीगोविन्दप्रियायां सप्तम सर्गः समाप्तः।

श्री राधा कुंजविहारिणे नमः

(अष्टम सर्गः)

दोहा—काम वान विँध राधिका कर दुख रात व्यतीत।
प्रनत नम्र पति सों कहत ईर्षामय जह गीत ॥१॥

(सप्तदश प्रबन्ध)

पद—केशव ! माधव ! अब कहा कहिए।
जो दुख हरत कमल दल लोचन ताही के ढिंग जइये ॥१॥
कपट वचन में सुन्यो न चाहत सो मोकों न सुनइये।
रैन जागरन नैन अरुन भये अब पुनि कहा वतइये ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

सौतन कों सिंगार रसासव पी पी मत्त बनइये।
हरे राम ! बहु कष्ट विषय जह कहा तुम्हें जु जनइये ॥३॥
जो बोलो मैं रैन तिहारे हेत जग्यो तेहि कारन लाली।
तो कज्जल कारे बिम्बाधर कहां भये मोहन वनमाली ॥४॥
काम जुद्ध में तीखे नख खत रेख विजय सुख चाखे।
मानो नील मनी की पाटी कनक बरन लिख राखे ॥५॥
कहो कदाचित तुम्हें खोजते कंटक लगे निशा में।
काम वृक्ष पत्रन सम महावर दीखत हृदय दिशा में ॥६॥
होठन लगे दन्त खत मेरी सौतन के घर प्यारे।
पीड़ा भई हृदय मेरे में देखहु नन्द दुलारे ॥७॥
तुमरे हेत कमल तोरन गयो अधर भमर नें मारे॥
तो तुमकों हों समझू निश्चय तन कारे मन कारे ॥८॥
जा वन में अबला जन मारन हेत भ्रमन तव भारी।
बाल चरित्र पूतना मारी तो जह बात पुकारी ॥९॥
श्री जयदेद रचित सुर दुर्लभ खंडित जुवति विलापहि।
रामराय हरि चरित्त हरेगो भक्त वृन्द भवतापहि ॥१०॥

(सप्तदश प्रबन्ध समाप्त)

सवैया—हे हरि गोप वधू पद को हिय रंग महावर छाय रह्यो है।
राग न भीतर नेंक हु है जह बात प्रतच्छ बताय रह्यो है॥
प्रेम बनावट में नट सो मुहि शोक औ लाज जनाय रह्यो है।
सो कपटी जन को मिलवो न भलो जह शास्त्र सिखाय रह्यो है॥

झाँझ—ललित लता मंदिर के आंगन प्रात समें राजत पिय प्यारी।
प्रीतम को पट पीत प्रिया पे ओढें लाल प्रिया की सारी॥
हंसत सखी जन देखत लज्जित प्रिया दृष्टि कजरारी।
रामराय सब जग कों सुखदें राधा कुंजविहारी ॥१॥

इति श्री जगन्नाथ स्वरूप श्री जयदेव महाप्रभुवंशज श्रीराम-
राय कृत श्री गोबिन्द प्रियायां विलक्ष लक्ष्मीपति नामक
अष्टम सर्गः समाप्तिमगात्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीराधाकुंजविहारणे नमः ।

(नवम सर्गः)

मांझ—कामदेव पीड़ा सों पीड़ित रति रस रहित न सोहै,
अति दुःखित है तिरस्कार कर पति कों जो जग मोहै ।
हरि के चरित चिन्तवन करि करि कलहान्तरिता जोहै,
लखि एकान्त कहत सखि तासों प्यारी तुम सम को है ॥ १ ॥

(अष्टादश प्रबन्ध प्रारम्भ)

मान न कर बृषभान दुलारी
माधव सों माधव में मिलिये हृदय खोल रस नारी ॥ टेक ॥
जा बसन्त ऋतु पवन बहन लखि, आये हरि संकेत स्वयं सखि ।
या सों बढ़ि आनन्द और कहां कौन भवन सुकुमारी ॥ १ ॥
इन सम होहि ताल के फल क्यों, ऐसे कुंभ कुचा निष्फल क्यों ।
देखत मत्त करत मोहन कों आलिंगन कर प्यारी ॥ २ ॥
सुन्दर कृष्ण चन्द्रमा छोड़े, तिरस्कार कर २ मुख मोड़े ।
अब उनके कारन क्यों कांदत जुवति हंसत दै तारी ॥ ३ ॥
मृदु नलिनी दल शीतल शैया, नैन सफल अबलोक कन्हैया ।
अधिक विकल जिन होहु वात मम सुनों कहूँ हितकारी ॥ ४ ॥
काज करो अस निकट पधारे, मधुर बचन बोले तब प्यारे ।
दुखित चित्त जिन करो किशोरी कारज बनें सुखारी ॥ ५ ॥
श्री जयदेव ललित रस वानी, रसिक बृन्द आनन्द विधानी ।
रामराय श्री कृष्ण चरित जह हो बहु मंगलकारी ॥ ६ ॥

हरि विपरीत न कछु सुख पावो ।
गोपीनाथ मधुर हँस बोलें तुम कटु बचन सुनावो ।
गोकुलनाथ करत विनती जब मूंक सदृश बन जावो ।
प्रेम भरें श्रीमदन मोहनजू वैरभाव झलकावो ॥
सन्मुख भये आप मुख फेरो निज इच्छा हठ लावो ।
कृष्ण विरह को फल जह सामी सुनें न जाहि सुनावो ॥
चन्दन लेप दूर चन्दन की चर्चा विष सम भावो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामराय शशि सूर्य हिमानल केलि कल्प दुख लावो ॥ १ ॥

मोहन की मुरली सुखकारी

मृगनैनी मन हरत मधुरता धुनि बस भई सुर पुर की नारी ।
धन्य २ भाखत विमान चढ़ि फूल झरत शिर मालन भारी ।
छवि देखत धुनि सुनत चराचर आकर्षत महामंत्र छटारी ॥
गरबीले दानव कुल नाशक देववृन्द दुस्सह दुखहारी ।
मुग्ध मुकुन्द सर्ग जह नवमों रामराय अधरामृत प्यारी ॥ २ ॥

"इति श्रीरोहिणी पद्मावती पति कुलकलशायमान-
श्रीरामराय गोस्वामि कृत श्रीगीतगोविन्द-
प्रियायां नवम सर्गः ।

श्रीराधाकुंज विहारिणे नमः ।
(दशम सर्गः)

सवैया—रोष भरी तेहि रोष के कारन श्वास न लेत भली विधि सों ।
साँझ समें निज लाल सखी मुख देख रही जो भली विधिसों ॥
ऐसे सुभाव के भाव भरी जिय प्यारी के पास भली विधिसों ॥
हे मुरली धर आनंद सों विनती कर जोर भली विधिसों ॥१॥

पद—सुन्दर सुभाव वारी प्रान प्यारी मान तज ॥ टेक ॥
कारन बिन रोष नाही भावत है भामती जू काम अगिन मोकों
जरावे तासों मान अज । शीतल करवे कों मोहि मुख कमल
सुधा प्याउ हिय के हरसाइवे कों सोही सिंगार सज ।

बोलन में दन्तावलि चान्दनी को गर्व हरे-
भय रूपी घोर अन्धकार कों मनोज धज ।
मुख रूपी चन्द्र तेरो अधर सुधा को पान
देवे कों नैनहि चकोर ललचात लज ॥ १ ॥

शुभदिन्त ! मो पे जदि सांचे ही रुष्ट भई,
तीखे नख रूप वान सुख सों चलाइये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बांध लेहु मोहि दोनों भुज तो इन चैन परे,
दन्त पांति काट मोहि मन कों सलाइये ॥ २ ॥
मेरी तो भूषन धन जीवन तुमी हो प्रिये,
संसारी रत्नाकर रत्नन की मालिये।
होवो अनुकूल चित्त चाहत प्रसन्न देख्यो,
राधा सब बाधा हर निज जन कों पालिये ॥ ३ ॥
नैना नीले कमल के समान प्रान प्यारी तेरे,
तोहू क्रोध कारन अनोखे लाल है रहे,
काम पुष्पवान ही के भाव सों है भामती जू।
रंग्यो चाहो कृष्ण कों तो ऐसें भले रहे ॥ ४ ॥
कंचन कलशा से कुच हीरा के हार धरो,
हृदे देश रंजित हैं उझले झले रहे।
घन की जघन स्थली पे कामदेव आज्ञा कों,
घोसित कर वे को जह किंकनी ढली रहे ॥ ५ ॥
मृदु वैनी जो तुम कहो तो थल कमनल सों,
शोभित महान पद पंकज तिहारे में।
मेरे हिय रंजन परस्पर रति रंग विषे,
आनँद अमन्द दाता सो विधि समारे में ॥ ६ ॥
अलता के राग बड़भाग निज हाथन सों।
रंगत रंगीले करूँ संगत सहारे में ॥
राम राय शोभा की खान वृषभान सुते।
नित्य २ देखे पै नवीन ही निहारे में ॥७॥
सवैया—राधिके सोहि जे दारुन काम प्रकाम की आग सतावे मह
सब भूल्यो अनन्त वदन्त प्रिये अब सोच जिही कि कहू में कह
आश है एक विश्वास विशेष मेरे शिर भूषन रूप मह
श्री पद पल्लव थापिये शीतलता हिय होय कहे वकहा ॥१॥
कवित्त—जैसे चतुराई प्रेम रस में विशेष पगे
वानी जयदेव जू की शोभा सरसाये हैं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मानवती नायिका समूह कों सुखी ही करें
त्याग कं कठोरताई हिये में समाये हैं ॥
राधिका के तोष कों जो भाखे शिरी रामराय
कृष्ण चन्द्रमाजू बड़े ऊंचे भाव भाखे हैं ॥
धन्य धन्य लीला जह कुंजके विहारीजू की
धन्य जयदेव कविराज राज गाये हैं ॥

(उनविंश प्रबन्ध समाप्त)

सवैया—शंक विहाय निशंक वनो नहीं मेरें है तो बिन दूजी दुलारी
कुंभ समान कठोर कुचा जघन स्थल चित्त वसे तज सारी
केवल काम कूं छोड़ कोऊ मनमन्दिर वास नहीं अधिकारी
दीजे आलिगन भारी अरी सुन में तेरो प्यारो ओ तू मेरी प्यारी ॥१॥

दन्त दशो करि निर्दय चित्त जो चूक भई कछु मोसों नवेली ।
वन्धन कीजे भुजा भरिकें दृढ बंधन वांधि रखो अलिवेली ॥
क्रोध तजो अबवोध भजो आनन्द प्रदान करों रस पेली ।
काम न प्रान हमारे हरे तेहि पूर्ण उरोजन देहु ढकेली ॥२॥

हे शशिकान्तमुखी सुनिये जह कैसो अपूरब खेल भयो ।
जोर किशोर अवस्था भई तब बांकी सी भौंहें कहा न कयो ॥
सर्पिन रूप डसे जु हरी नहीं और उपाय कछू उलयो ।
मंत्र महा अधरामृत है पुनि क्यों न वचाओ जो कीर्ति छयो ॥३॥

हे कृश अङ्गि न भावे हमें जह मौन तिहारो सदा रहिवों ।
हे तरुणी मधुरे स्वर पंचम में बचनामृत को कहिवो ॥
नैन प्रताप सों ताप हरो हिय आनन्द सन्मुखता चहिवो ।
वंचन मोहि करो न प्रिये में तो आयो हूं आप चहू गहिवो ॥४॥

कवित्त—वन्धू वन्धूक के हैं सु अधर अनोखे लाल
चिकूने महुआ के फूल सम जे कपोल हैं ॥
श्यामल कमल नैन नासा तिल पुष्प रूप
कुन्द की कली सी दन्त आवलि अमोल है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काम के हू पांच वान वनें पांच पुष्पन सों
तिन को मुखादि अंग अंग सब टोल है ॥
जाही जग जीतवे को वल पायो महा तेरे
मुखकंज सेवा कीये फलति अतोल है ॥१॥
यौन मद मत्त नैन मुख हू सो चन्द्र सैन
मन कों आनन्द देत गमन मराल है ॥
जंघा कदली सुखंभ रति क्रीड़ा कामरंग
चित्ररेखा तुल्य भौंह सुन्दर विशाल हैं ॥
मदालसा इन्दुमती रंभा और कलावती
मनोरमा अपछरा पूर्ण गुण वाल है ॥
पृथ्वी पै वास करि सब को परिहास कर
राजत श्री रामराय स्वामिनी रसाल है ॥२॥

मांझ—कुवलय पीड़ हस्ति के मस्तक प्रिया उरोज समारे।
मारयो कंस प्रशंसा कर सब ब्रजगोपाल पुकारे ॥
श्री जयदेव देव भक्तन की प्रीति बढ़ावें प्यारे।
रामराय सो चतुर चतुर्भुज दशम सर्ग सुख भारे ॥१॥

इति श्री जगन्नाथदेवावतार श्री जयदेव महाप्रभु वंशोद्भव
परमहंसावतंस दार्शनिक सार्वभौम श्रीरामराय
गोस्वामी प्रणीतायां
श्री गीतगोविन्द प्रियायां दशमं सर्गः समाप्तिमगात्।

श्री राधा कुंज विहारिणे नमः।

अथ-एकादश सर्ग : प्रारभ्यते।

क०—प्रेम भरी बोलन सों करकें प्रसन्न चित्त
राधा मृग नैनी कोंसो बिधिना संभारे हैं ॥
अंधकार भरी सांझ अपनो सिंगार साज
केशव हू कुंज केलि शय्या में पधारे हैं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ताही छिन प्यारी जू को भूषन नवीन धरि
वसन विचित्र सखी बृन्द हू सिंगारे हैं ॥
ललिता मलूक महा रामराय कहे कहा
प्यारो महारानी जू कों वचन उचारे हैं ॥

(विंशतितम प्रबन्ध)

पद—श्री राधे सुन बात हमारी

वहु प्रकार मृदु वचन विलासी, तव पद कुंज नवत सुखराशी।
शीघ्र निकट तिनके जु पधारो, निधुवन शयन विहारी॥ १॥
हे घन जघनी पीन इस्तनी, धीरे धीरे पद धर धरनी।
मनि नूपुर धुनि हंसा गमनी, चल पिय पास पियारी॥ २॥
तरुनी जन मोहन व्रत धारो, मुरली धुनि गावत मत बारो।
काम वन्दि कोकिल छवि धारो, बोलहु मधुर उचारी॥ ३॥
हे करभोरु सुनों सुखवानी, लता पवन चल पल्लव पानी।
कर संकेत कहत रस खानी, देहु विलम्ब निकारी॥ ४॥
जदि विश्वास न मोर सहेली, काम तरंग कंप कुच मेली।
सूचित हरि अलिंगन केली, हीर हार जल धारी॥ ५॥
रति रन हेत सजी सब भांती, तजि लज्जा किंकिन धुनि माती।
क्रोध छांडि धारहु मन शान्ती, हम सब सखी तिहारी॥ ६॥
मदन मत्त मोह नाहिं सुना वहु, कंकन धुनि आगमन जनावहु।
काम बान सम नख के भावहु, चल सखि हाथ समारी॥ ७॥
श्री जयदेव रचित रत्ना वलि, लज्जाकारी ललित पदावलि।
रामराय जुबती करि घायलि, भक्त गान सुख कारी॥ ८॥

पद—सखि तोहि बात कहा समुझाई।

अन्धकार मय कुंज भवन में बैठे पिय कों चिन्ता छाई।
बिकल बिचारत प्यारी मोकों मधुर बचन बोलेंगी॥
पुनि सर्वांग करें आलिंगन परिरंभन डोलेंगी।
जो विधि विविध मनोरथ करि २ तुम्हें देखि काँपे हैं॥

Dr. Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्यारी मोहि कहा अब कहि है ध्यान धरत झाँपें हैं।
अंग परस रोमांच जुक्त है रति रस बस थक जावें॥
श्रम जल बिन्दु भयो तर बिग्रह ध्यान मध्य सब भावें।
कबहुँ खड़े आदर सों देखे अलख भये सुध त्यागें॥
देर न कर अनुरक्त महा तोहि रामराय अनुरागें॥

प्यारी सुन जह विनय विशाला।

कज्जल नैन तमाल गुच्छ श्रुति पहिरो नील कमल शिरमाला।
नील निचोल अंधेरी कों करि कुच कस्तूरो रचना जाला॥
केशर सम जिन गौर वरन तन तिन को होय कसोटी अंधाला।
सुवरन ज्यों त्यों तहां परीक्षा सुवरन को कसोटी तम माला॥
सहज होय सिंगार सोई जह विलम न करहु अशेष रसाला।
रामराय अभिलाषा भारी भरे विराज रहे नन्दलाला॥२॥

सवैया—हीरा के हार सुवर्ण को किंकिनि मोती के जामें जड़ाव जड़ाये
कंकन मंडित नाना मनिन सों ऊपर बाजू के बन्द जुड़ाये।
कुंज के द्वार निहार श्री नन्दकुमार को लज्जित नैन लजाये॥
ताई समें कोऊ प्यारी सहेली ने प्यारे सों प्यारे जे बैन सुनाये॥३॥

(एक विशाति तमः प्रबन्ध प्रारम्भ)

श्री राधे भीतर पग धारो।

सुन्दर कुंज सदन के आंगन केलि भवन भावना विचारो।
रति क्रीड़ा उत्साह हास जुत मुदित मुखी माधव प्रन पारो॥
कनक कलश कुच चंचल मुक्ता हारावली त्रिवली तट धारो।
कुसुन समूह सुगन्ध लतागृह तब अंग पुष्प समाना॥
सरस गीत गान्धर्वे मलयज पवन सदन तुव प्राना।
घन जघनी घन सघन लता वन रति पति रससों साजो।
रस पीवन को भये इकत्रित मधुप तहां पिय राजो॥
दंत कान्ति की दमक मानिद्युति जहां कोकिला बोलें।
ऋतु वसन्त सों चंचल कूजित है रही विविध कलोलें॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पद्मावति सुखदायक हरिजन गायक श्री जयदेवा।
कविराजन के राज दीजिए रामराय कों सेवा ॥३॥

(एक वर्शिनितम प्रबन्ध समाप्ति मगात्)

श्रीराधे सुन माधव को हालँ।
प्रेम पंक में धसि रसरागी भये तहां वेहाल॥
खिस अनेक तुम्हें हिय धारत काम ताप सों श्रान्त।
पीवन चहन सुधा विम्वाधर गोद विठाय नितान्त॥
भृकुटि कटाक्ष लक्ष पद सेवक लीने मोहन मोल।
अब हिय में संकोच न कीजे मिलो गांठ सब खोल॥
श्रीहरि विषय नैन चंचल चल लज्जा सह आनन्द।
रामराय नूपुर धुनि करतीं मिली कुंज निर्द्वन्द॥४॥

(अथ द्वाविंशति तमः प्रबन्धः प्रारम्भ)

निरखत प्रिया प्रानपति शोभा।
निज मुखचन्द दरश आल्हादित उच्छल निधि सम लोभा॥
देख चन्द मंडल कों चंचल उज्ज्वल रस विधि नाना।
केवल प्रिया प्रीति के पोषक तेहि विहार मधि प्राना॥
काम भाव परिपूर्ण भये वस परमानंद उपासी।
फेनिल जमुना जल सम हीरा हार धार सुख राशी॥
पीत पराग समूह पीत पट नील कमल तनु राजे।
शरद प्रफुल्ल कमल मधि क्रीडत खंजन जनु जल साजे॥
तरल तडाग तरंग कटाक्षन छोड़त श्री मुख सो है।
रति अभिलाषिन भामिन को मन काम उदय कर मोहै॥
मुख सरोज दर्शन हित चल दल कुंडल शोभा साजी।
मृदु मुसकन विम्वाधर लखि रति हेत भई सव राजी॥
चन्द्र किरन शोभित घन अन्तर कुसुम सुशोभित केशी।
तिमिर उदित विधु मंडल निर्मल चन्दन तिलक सु वेशी॥
रोमां चित तन आलिंगन मन मनि भूषित सज्जित तन।
इक टक निरखत हरखत राधा मदनमोहन निज जीवन॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री जयदेव कवीश्वर वरनन सों दूने आभूषन।
रामराय रस तत्व पूर्ण निज पुण्य करो हिय धारन॥
इति द्वाविंशति तमः प्रवन्धः समाप्तिमगात्
दोहा—प्रीतम के दर्शन समें राधा नैन अपांग।
करन कुहर पर्यन्त भै सीमा सहज उलांघ॥ १॥
प्रेम भरे आनन्द सों वरसावत रसधार।
मनु प्रस्वेद प्रवाह है कौन करे निरधार॥ २॥

स०—कान खुजानो वहानो किये मुसकान भरी सगरी सखियां
प्रेम प्रिया प्रनयी वतियां परजंक चढ़े रति की अखियां।
कुंज के बाहिर श्री मतियां भई लाज को लाज इन्हें लखियां
श्री मुख चन्द विलोकि प्रिया प्रिय कौन को कौन कहे सुखियां।
दोहा—हते कुवलयां पीड की रुधिर विन्दु संग्राम।
मनों मुदित सिन्दूर रंग लेपन कियो ललाम॥
जयलक्ष्मी वरसा किये पारिजात के फूल।
तिन सों पूजित कृष्ण भुज मेटें भक्तन शूल॥
श्री जयदेव दया करी दरशायो सुख कन्द।
रामराय शिव सर्ग जह रसानन्द गोविन्द॥
इति श्री सारस्वत कुलाब्धिकौस्तुभ श्री जगदी शावतार
श्री जयदेव महाप्रभु वंशोद्भव दार्शनिक सार्व भौम
श्री रामराय गोस्वामि प्रणीतायां
श्री गीत गोविन्द प्रियायां सानन्द गोविन्दनामैकादश सर्ग।
श्रीराधा कुंजविहारिणे नमः।
(अथ-द्वादश सर्गः प्रारभ्यते)
दोहा—कुंज भवन वाहिर भई जब सब सखी समाज।
मदन वेग वश हँस रही श्रीराधा अति लाज॥ १॥
मन्द मन्द मुसक्यान में दिये अधर मनु पाग।
पल्लव सिज्जा दीठ दे वदत कृष्ण अनुराग॥ २॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(त्रयोविंशतितमः प्रबन्ध प्रारंभ)

सुन सुन्दरि निज पद पल्लव कों पलभर पल्लव शैया जू।
पधरावो निज समता को फल दीजे जाहि दलैया जू॥
पग मग थकित भई हो तासों निज कर कमल दबाऊं जू।
गति अति धीर वीर नूपुर श्रम सुख सिज्जा पधराऊं जू॥
वदन सुधानिधि सों रस वतियां पीवत अति हर साऊं जू।
विरह सदृश वक्षस्थल अंचल हठे कुचन सरसाऊं जू॥
मम आलिंगन हित सन्मुख है रोमांचित मेरे सम जू।
और हि अलभ उरोज लागि मोहि दूर करो मदन श्रम जू॥
विरह दवानल व्याकुल दासहि भामिनि जीवित चाओ जू।
तो आसक्त चित्त अपने में अधर सुधारस प्याओ जू॥
चन्द्रमुखी निज कंठ गीत सम किंकिनि शब्द सुनाओ जू।
कोकिल कूल बिकल बिरही कों सुख मय शान्त बनाओ जू॥
निष्फल कोप विकल भये मोकों लखि लज्जित सम वन्दे जू।
नैन खोलकर रमन संग मम दीजे परमानन्दे जू॥
पद पद में आनँद रसदाता श्री जयदेव बनायो जू।
रामराय श्रीकृष्णचन्द्र सुख हित भगवान सुनायो जू॥

(त्रयोविंशतितमः प्रबन्धः समाप्तिमगात्)

पद—श्रीराधा माधव सुरतारंभ।

गाढालिंगन रोम विघन सम नैन कटाक्ष दृक्ष कों दंभ।
अधर सुधा रस पान करन में बचन रचन भावत न विडंव।
रामराय सोहै न कला कोऊ आनंद आल्हादिनि परिरंभ॥ १॥

रति विपरीत पिया पिय भावे

सुरत समर में सुभट लाडिलो विजय मेल जह खेल दिखावे।
भुज बन्धन में बांधि विधी कों जुगल उरोजन सों पुनि दावे।
नखछत करत अधर रस मोहत पकर केश कटि तटहि नचावे।
श्रमसों शिथिल जघन वक्षस्थल ढोली भुजा हियो धरकावे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नैनवन्द आनन्द मगन भई प्यारो पूर्ण तृप्त सुख पावे।
रामराय पौरुष रसभारी ताकों प्यारी निजहि जनावे ॥ २ ॥

रतिरस चिन्ह अनोखे मोहैं।
प्रिया उरोज लगीं नख रेखा जनु शिव शीश चन्द्रदल सोहैं।
रैन जागरन नैन अरुन भये चुम्बन अधर लाल सों सेत।
केश पास कुसुमावलि विथकित शिथिल किंकिनी कटी समेत ॥
मदन पंचशर लगे प्रिया के वेध्यो मदन मोहन को जाय।
रामराय जो निरखत वश भये अद्भुत सुख कहते न बनाय ॥ ३ ॥

मोहन को मन नांहि अँघावे।
प्रिया उरोज सरोज निरखिवे हित कछु चातुर बात बनावे ॥ टेक ॥
हे सुन्दरि छीरोदधि तट पर मोहि स्वयं तुमनें वर लीनों।
तुम्हें न देखि भवानी पति ने दुख सों विष को भक्षन कीनों ॥
जा विधि भोरी नवल किशोरी इकटक ठाड़ी करीं बिहारी।
रामराय नैनन सुख लीनों वसन हटाय मिटाय चिहारी ॥ ४ ॥

जह सिंगार न क्यों मन करसे।
जाकों देख विश्व को सुन्दर परम तृप्ति मानत अति हरसे ॥ टेक ॥
केशपास विलुलित अलकावलि चंचल श्रमकन ललित कपोल।
विंधे अधर पल्लव की शोभा त्रुटित कंचु कुचहार अमोल ॥
कटि करधनी चली निज थल सों जघन सघन कर पल्लव दाव।
दूजे कर आच्छाद उरोजन रमन कमन अह सहज सुभाव ॥
टूटी लर लटकत मोती की चोटी की मर्दित वनमाल।
रामराय ऐसी प्यारी लखि माधवलाल भये बेहाल ॥ ५ ॥

कौन बिहारी सम बड़ भागी।
काम केलि उत्कंठा समुदित श्वास चलित उरजन अनुरागी ॥ टेक ॥
आलिंगन सों अधिक हर्षवश शिथिल कार्य अक्षम मृगनैनी।
अधखुल नैन मुखाम्बुज मुसकन सीतकार सों मन धन लैनी ॥
प्रघट न करे हृदय व्याकुलता किन्तु कछुक बातन मुख भाखे।
दशन किरन सुख सदन वदन कों रामराय पूरन तप चाखे ॥ ६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोहा—सुरत अन्त स्वाधीन पति प्यारी सब विधि शान्त।
प्यारे सों श्रम हरन हित वदत वचन एकान्त॥ १॥
हे प्यारे हे प्रानपति हे बल्लभ सुकुमार।
अब मेरो उपचार करि कर सुन्दर सिंगार॥ २॥

(अथ चतुर्विंशतितमः प्रबन्धः)

हे यदुनन्दन करहु सिंगार।
कामदेव मंगल कुचकलशन, चन्दन शीतल निज कर कमलन।
केलि लिखो कस्तूरी पत्रक मकरी बेल सुचार॥ १॥
काम कटाक्ष वान से रोचक, त्वदधर चुम्बन कज्जल मोचक।
मधुप समूह समान बनावहु कज्जल रेखा प्यार॥ २॥
हे शुभवेष नैन हरिनन के, सुख विलास रोधक श्रवनन के।
मदन मनोहर पास सदृश कुंडल पहिरावहु सार॥ ३॥

श्रीराधा कुंज विहारिणे नमः

द्वादश सर्गः

अलकावलि अलिकुल सम जोहे, निर्मल मुख मंडल भाल सोहे।
केश पांस गूंथहु कंघी ले धीरे धीर सुधार॥४॥
रतिश्रम स्वेद बिन्दु के धारक, अर्धचन्द के चिन्ह समारक।
कमल समान सुकोमल मुख पिया मृग मद तिलक समार॥५॥
कामदेव ध्वजचौर सहेली, मोर पिच्छ की मानहु बेली।
वैनी ढोले भये फूल फिर दीजे मान अपार॥६॥
काम मत्त मद हस्थि मंदरा, रस सिंगार गभीर कन्दरा।
जघन देश मनि किंकिन भूषन वसन धराउ उदार॥७॥
कृष्ण ध्यान धारा कलिजुग में, भक्त पाप नाशक जग मग में।
रामराय भूषन सम धारहु श्री जयदेव उचार॥८॥

(चतुर्विंशतितमः प्रबन्धः समाप्त)

मांझ—कुच फल पत्र कपोल चित्र लिख कटि कांची पहिरावो।
केश पाश कुसुमन सों गूथो कर कंकनजु धरावो॥
चरन कमल नूपुर घन सुन्दर पीताम्बर सुख पावो।
रामराय प्यारी भाखन सुन गोकुलनाथ सरावो॥१॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पलका पन्नग राज बनायो ताकी मनि परछांई।
सेवत चरन कमल कों कमला कला अनेक दिखांई॥
ताही विधि अगनित स्वरूप हरि अगनित नैन निकाई।
मदन सदन श्री जी कों निरखत रामराय सुखदाई॥२॥
जो गान्धर्व कला सप्तस्वर राग रंग चतुराई।
राधामाधव ध्यान धारना नव नव कुंज रचाई॥
रस सिंगार भेद की रचना श्री जयदेव बनाई।
रामराय इकतान चित्त लखि गीत गोविन्द लखाई॥३॥
सारस्वत द्विजवंश प्रशंसित भोज देव गुन भारी।
श्री राधापतो कों संग ले बसे वंग रुचिकारी॥
तहां भये जयदेव रूप धरि श्री जगदीश मुरारी।
रामराय तिन श्याल पराशर गीत गोविन्द लिखारी॥४॥
महुआ मत चिन्ता कर शर्कर तो में कर्कश ताई।
दाख तोहि देखेंगे अब को सुधा धरा में नांई॥
खोर नीर रस कान्ताधर तू धरनि रसाल रुवाई।
जब तक श्री जयदेव देव की भूतल पर कविताई॥५॥
द्वादश सर्ग कुंज द्वादश सम राधा माधव राई।
कविनृप चक्रवर्ति करुना कर तिन की लीला गाई॥
जह सु प्रीत पूर्व पीताम्वर नामक सृष्टि बनाई।
रामराय निज कुल की रचना बड़े भागसों पाई॥ ६॥
संवत सोलरु सो वाईसा, ऋतु वसन्त सरसाई।
माधव मास राधिका माधव की जह लीला गाई॥
जमुना तट अद्वैत निकट वट मदन गोपाल सहाई।
रामराय श्री वृन्दावन की अति अद्भुत प्रभुताई॥ ७॥

इति श्री जगदीशावतार श्री जयदेव महाप्रभु बंशोद्भव दार्शनिक सार्वभौम, रसिक सम्प्रदायाचार्य श्री रामराय गोस्वामि प्रभु प्रणीतायां श्री गीत गोविन्द प्रियायां पदावल्यां सुप्रीतपीताम्बरो नाम द्वादश सर्गः समाप्तः। शुभम्।

मुद्रक—राजनारायण अग्रवाल बी० ए०, मॉडर्न प्रेस, आगरा।
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीमाध्वगौडेश्वर ग्रंथमाला से प्रकाशित पुस्तकें-

१—माधुरीवाणी—(श्री माधुरीजीकृता)
२—मोहिनीवाणी—(श्री गदाधरभट्टजीकृता)
३—सुहृद्वाणी—(श्री सूरदासमदनमोहन की)
४—अर्चाविधि—
५—वल्लभरसिकजी की वाणी—(श्री वल्लभरसिकजी की)
६—प्रेमसम्पुट—(श्री विश्वनाथ चक्रवर्त्तीजी कृत)
७—भक्तिरसतरंगिणी—(श्री नारायणभट्टजी कृता)
८—श्रीहरिलीला—(श्री ब्रह्मगोपालजी कृता)
६—गीतगोविन्दपद—(श्री रामरायजी कृत)
१०—गीतगोविन्द—(श्री रसजानिवैष्णवदासजी कृत)

यन्त्रस्थ—

१—श्री चैतन्यचरितामृत—(श्री सुवलश्यामजी कृत) व्रजभाषा में
२—गोवर्द्धनशतक—(श्री केशवाचार्य्यजी कृत)

प्रकाशित होने वाले—

१—व्रजभक्तिविलास—(श्री नारायणभट्टजी कृत)
२—गोविन्दभाष्य—(श्री वलदेवविद्याभूषणजी कृत)
३—भागवत की भाषा—(श्री वैष्णवदासजी कृता)
४—भक्तिग्रन्थावली—(श्री विश्वनाथ चक्रवर्त्तीजी कृता)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पणपत्र

श्रीश्रीराधारमणचरणदासदेवस्यानुचरप्रवरस्य, सकलदेशप्रसिद्ध
कीर्त्तिराशेः, प्रेममात्रसर्वस्वकृतस्य, निरन्तरसात्विकभावा-
वल्याविभूषितस्य, दीनतासागरस्य, मधुरस्वरालापैः
सर्वदागौरकीर्त्तनकर्त्तुः, श्रीरामदासेतिमधुर-
नाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीयआराध्यदेवस्य,
श्रीगुरुदेवस्य, बाबाजिमहाराजस्य
प्रीत्यर्थे

समर्पितेयंवाणी

मॉडर्न प्रेस, आगरा में छपी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi